पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २१ अंक-३१ सोमवार, २३ मार्च २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर, मुंबई से एक साथ प्रकाशित

भूल सुधारेगी माकपा

केन्द्रीय सत्ता से दूरी बनाकर चलने वाली माकपा को अब अपनी गलती का अहसास हो गया है। तीसरे मोर्चे की सरकार बनने की संभावना को देखते हुए पार्टी ने उसमें हिस्सेदारी का संकेत देकर साफ कर दिया है कि उसने 1996 की भूल को सुधारने का मन बना लिया है। माकपा को भरोसा है कि पिछले दो माह की मेहनत से जिस तरह नौ दलों को जोडा जा चुका है चुनाव बाद ताकतवर बनकर उभरने वाले तीसके विकल्प की तरफ कई दल खुद-ब-खुद खिंचे चले आएंगे। माकपा महासचिव प्रकाश कारत ने पार्टी का घोषणा-पत्र जारी करते हुए संप्रग और राजग सरकारों को कठघरे में खडा किया, वहीं दावा किया कि तीसरे मोर्चे की सरकार बनी तो वह ऐसा न्यूनतम साझा कार्यक्रम बनाएगी जिसमें समग्र भारत के विकास का खाका होगा।

ऊंटों की करवटें

आचार संहिता के लगते ही चुनावी सरगर्मियां भी तेज हैं। प्रचार–प्रसार के साथ नफे–नुकसान की गणित पर ज्यादा काम किया जा रहा है। बसपा और सपा के अड़ाए जाने वाले अड़ंगों से निपटने के लिए लोकल लेवल पर डील हो रही है। राष्ट्रीय स्तर पर ये पार्टियां कांग्रेस और भाजपा को कुछ नुकसान देगी। उम्मीदवार जानता है इसलिए वह अपने स्तर पर ही इसे निपटाने में प्रयासरत है। दूसरी तरफ सपा–बसपा के उम्मीदवार स्वयं ही जानते हैं कि उनका कोई भविष्य नहीं है। वे केवल भाजपा व कांग्रेस को मिलने वाले वोटों की संख्या को कम कर सकेगें। इसके अलावा उनके खाते में कुछ और नहीं आ सकेगा। सियासी गणित में कर्नल बैसला भी उलझे हैं। गुर्जर आंदोलन के दौरान उन्होंने सेना के अनुभव से आंदोलन की चाक–चौबंद व्यवस्था की थी। वे भी इस बार उसी पार्टी या नेता को सपोर्ट देने का प्रण ले चुके हैं जो उन्हें आरक्षण दिलाने

✍ उत्तम झंवर

में मदद करेगा। यदि गौर किया जाए तो बैसला अपना फैसला लगभग सुना ही चुके हैं। आपको यहां में ध्यान दिलाना चाहूंगा कि राजस्थान के गुर्जर आंदोलन के समय प्रह्लाद गुंजल और अंतरसिंह भडाना के नेतृत्व में कई प्रमुख नेताओं को भाजपा ने निष्कासित कर दिया था। जिसके बाद शुरू हुए मीणा आंदोलन के नेता किरोड़ीलाल मीणा की दबाव की राजनीति के चलते प्रदेश नेतृत्व से टकराकर भाजपा से अलग हो गए। इस दौरान कांग्रेस ने कोई ठोस निर्णय नहीं लिया। कर्नल किरोड़ीसिंह बैंसला कांग्रेस से खफा हैं, वे पिछले दिनों कह भी चुके हैं कि कांग्रेस को खामियाजा तो भुगतना ही होगा। उनका गुर्जरों को पांच फीसदी विशेष आरक्षण विधेयक कांग्रेस ने लागू नहीं होने दिया था।

वहीं राहुल गांधी जैसे युवा नेता के साथ आडवाणी भी कुल जमा एक करोड़ चौदह लाख की जनसंख्या में से केवल पांच फीसदी मतदाताओं को रिझाने के लिए इंटरनेट पर भी अपनी जुगाली कर रहे हैं। पिछले दिनों पब और महिलाओं के खिलाफ चले आंदोलन पिंक चड्डी में इंटरनेट के जरिये देश–विदेश के लाखों लोग जुड़े। इसी से प्रेरणा लेते हुए राजनेता वेबसाइटों पर भी नजर आ रहे हैं। जबकि वे यह भूल रहे हैं कि यह ग्रास रूट लेवल पर होने वाला मतदान है। इसमें भाग लेने वाले ग्रामीणों के लिए इंटरनेट का कोई मतलब नहीं। उनके लिए आज भी सड़क, पानी, बिजली ही मुद्दे हैं और दो जून की रोटी उनकी जरूरत है। जो लोग इंटरनेट को समझते हैं उनका वोट किसे जाएगा, यह तो लगभग तय ही होगा। इसमें मंदी के दौर में मिलने वाले फायदों की गणित खास है। कुल मिला कर यह मान लें कि पोस्टर, बैनर, ढोल नगाड़ों के खर्च के साथ अब इंटरनेट पब्लिसिटी भी नए खर्च के रूप में जुड़ी है। यह आप खुद ही समझ लें कि इस खर्च को कहां से और कैसे वसूला जाएगा। देखें, इस बार ऊंटों की करवटों की कीमत क्या होगी?

विधानसभा चुनाव के पूर्व तक भाजपा को हराने के लिये हर तौर तरीके अपनाने वाली भाजश नेत्री उमा भारती चुनाव में चारों खाने क्या चित्त हुईं उनका बड़बोलापन पूरी तरह खत्म हो गया है और कभी भाजपा को हराने की कोशिश में जुटी फायरब्रांड नेता आज भाजपा के आगे नतमस्तक है. अब यही नेता न केवल अपने चिर विरोधी लालकृष्ण आडवाणी को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर देखना चाहती है. बल्कि उसके लिये बिना बुलाए मेहमान की तरह पूरे देश में भाजपा प्रत्याशी के पक्ष में प्रचार करने को भी तैयार है. फायरब्रांड उमा भारती भले ही यह कह रही हो कि वह भाजपा में प्रवेश नहीं कर रही है. मगर उनके द्वारा आडवाणी को लिखी चिट्ठी तो यही बताती है कि वे भाजपा में फिर से प्रवेश के लिये दहलीज पर खड़ी है भले ही भाजपा का कोई नेता उनकी अगवानी नहीं कर रहा हो. इन सबसे एक बात साफ है कि बुरी तरह से पराजित उमा भारती की अब न तो कोई ताकत बची है और न ही जनाधार, सो वे अपमान सहन कर भी भाजपा में अपना भविष्य देख रही हैं.

नतमस्तक उमा भारती

(रामस्वरूप मंत्री)

कभी भाजपा को पानी पी पीकर कोसने वाली म.प्र. की पूर्व मुख्यमंत्री और भाजश नेता उमा भारती आज बिन बुलाए मेहमान की तरह भाजपा की दहलीज पर खड़ी है. म.प्र. में गत विधानसभा चुनाव के पूर्व यही उमा भारती कह रही थी कि भाजपा को सत्ता से बेदखल करना और हराना उनका मुख्य मकसद है और भाजपा यदि फिर जीती को वे राजनीति छोड़ देगी. इसके लिये उन्होंने कांग्रेस से लेकर समाजवादी पार्टी नेता अमरसिंह तक से गुप्त समझौते भी किये लेकिन वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पाई उनके सभी रणबांकुरे धराशाही हो गये तथा वे खुद भी चुनाव नहीं जीत पाई. उनके कुल पांच प्रत्याशी ही जीत पाए तथा उनमें से भी दो तीन भाजपा के पहले में चले गये. उनके अधिकांश सिपहसालार भी भाजपा में प्रवेश कर गये या प्रवेश करने वाले हैं. ऐसे में उमा भारती को अपना राजनीतिक अस्तित्व खतरे में दिखाई देने लगा. उनको लगा कि यदि अब भी वे अपने बड़बोलेपन पर कायम रहती है तो उनका राजनीतिक अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा. अपने डाकियों द्वारा वे बार-बार भाजपा में अपने प्रवेश की संभावना तलाशती रही, मगर उनके चिर विरोधी शिवराजसिंह चौहान से लेकर संघ प्रचारक सोनी तक उन्हें भाजपा में कोई तवज्जों नहीं मिलने दे रहे थे. हर बार उनका दांव उलटा पड़ता रहा. सो अब उन्होंने अपना अंतिम हथियार इस्तेमाल किया और भोपाल में बयान दे डाला कि वे आडवाणी के प्रधानमंत्री बनते देखना चाहती है. दूसरे ही दिन वे दिल्ली पहुंच गई तथा आडवाणी से मुलाकात कर उनका समर्थन करने और देशभर में भाजपा प्रत्याशियों का समर्थन करने का ऐलान कर आई. गौरतलब है कि आज जो भाजपा का समर्थन कर रही है इसी उमा भारती ने आडवाणी से लेकर शिवराज तक सभी भाजपा नेताओं को खूब कोसा है और उनके खिलाफ तीर चलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है. लेकिन जब उन्हें जनता ने नकार दिया तथा उनकी हैसियत दिखा दी तो वे अब समझ गई कि राजनीतिक हैसियत बचाने के लिये उनका भाजपा में आना बहुत जरूरी है. इसी के चलते आडवाणी को खुश करने का अपना आखरी तीर चलाया. उन्होंने भाजपा प्रवेश का रास्ता आसान बनाने के लिये पूरे देश में भाजश का एक भी उम्मीदवार खड़ा न करने का ऐलान भी किया, पूरी तरह भाजपा के आगे नतमस्तक होने के बावजूद भाजपा के खेवनहार इस फायर ब्रांड नेता को कोई तवज्जो देने को तैयार नहीं है. उन्हें मालूम है कि उमा भारती की अब कोई औकात नहीं है. वे भारतीय राजनीति का एक चुका हुआ कारतूस है और चुका कारतूस केवल कचरे के ढेर की शोभाभर होता है. इसलिये तश्तरी में रख समर्थन देने पहुंची उमा भारती के लिये भाजपा के वरिष्ठ नेता तो क्या किसी छुटभैये नेता तक ने स्वागत में कसीदे नहीं काड़े. यह उनकी हैसियत समझने के लिये पर्याप्त है.

(पेज 4 और 16 भी देखें)

खंड-खंड हुआ भाजपा का अनुशासन

आडवाणी के बाद भाजपा की एकता पर उठे सवाल

(पिट्स दिल्ली ब्यूरो)

इंदौर, भोपाल, जयपुर, लखनऊ और दिल्ली सभी जगह भाजपा में गुटीय संग्राम नहीं महासंग्राम मचा हुआ है. गुटीय घमासान में भाजपा ने कांग्रेस की राह पकड़ ली है. कहा जाने लगा है कि भाजपा में भी जितने नेता, उतने गुट हो गये है और आडवाणी के बाद भाजपा खंड-खंड होकर बिखरे भले ही नहीं लेकिन उसमें अपनी ढपली-अपना राग वाले कई नेता हो जायेंगे. देश की सबसे अनुशासित पार्टी की इस हालत पर भाजपा के शुभचिंतकों के साथ ही उसके मातृ संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठों के चेहरों पर शिकन महसूस की जाने लगी है.

शेष अंतिम पेज पर....